शनिवार, ५ सितम्बर, २०२०

आत्मीय पाठकगण,

सितम्बर माह की खुशीभरी शुभकामनाएँ!

भले ही २०२० का यह वर्ष हमारे लिए एक के बाद एक चुनौतियाँ, एक के बाद एक अनपेक्षित घटनाएँ लाया है; भले ही हमें गहरे दुःख व हानी का सामना करना पड़ा है, फिर भी हमें अपना केन्द्रण अपने मूल सिद्धान्तों पर बनाए रखना होगा। सिद्धयोग पथ पर हमारा एक मूल सिद्धान्त है कि हम अपने आन्तरिक आनन्द को बनाए रखें और उसे अभिव्यक्त करें। हम ऐसा इसलिए करते हैं ताकि हम स्वयं अपना उत्थान कर सकें और उन सबका भी जो हमारे जीवन में मौजूद हैं, और हम यह संकल्प धारण करते हैं कि हमारा यह आनन्द, हमारी यह खुशी समस्त संसार में व्याप्त हो। इसलिए, एक बार फिर मैं आपको *सितम्बर माह की खुशीभरी शुभकामनाएँ देती हूँ!*

मार्च २०२० में, जब पूरे विश्व का ध्यान पहली बार महामारी के समाचार पर केन्द्रित हुआ था, और जब अनेक देशों की सरकारें लोगों की गतिविधियों पर कड़े नियम लागू कर रही थीं, तब एक माध्यम जिसके द्वारा सिद्धयोग पथ पर हम सभी ने आनन्द की अनुभूति की, वह था, 'मन्दिर में रहो' सत्संगों में भाग लेना। २१ मार्च को आरम्भ हुए ये सत्संग जो आगे अनेक महीनों तक जारी रहे, श्रीगुरुमाई की ओर से हम सभी के लिए प्रसाद रहे हैं।

जैसा कि आप जानते ही हैं, श्रीगुरु से प्राप्त उपहार 'प्रसाद' है। सिद्धयोग विद्यार्थी यह बोध बनाए रखते हैं और अनुभव करते हैं कि श्रीगुरु से मिलने वाला प्रसाद अक्षय होता है, चिरस्थाई होता है। इसका मोल अद्वितीय और अतुलनीय होता है। इसकी शक्ति—गुरु-प्रसाद की शक्ति—अनमोल है।

भारत के शास्त्रों में कहा गया है कि एक शिष्य को अपने श्रीगुरु से जो कुछ भी प्राप्त होता है, वह प्रसाद है। शास्त्रों में यह वर्णन किया गया है कि किस प्रकार श्रीगुरु के आशीर्वाद प्रसाद हैं। श्रीगुरु से प्राप्त ज्ञान प्रसाद है। श्रीगुरु की कृपा प्रसाद है। श्रीगुरुगीता के ११०वें श्लोक में भगवान शिव गुरुप्रसाद के विषय में यह सिखावनी प्रदान करते हैं :

> *गुरोः कृपाप्रसादेन आत्मारामं निरीक्षयेत्।*
> *अनेन गुरुमार्गेण स्वात्माज्ञानं प्रवर्तते॥*
>
> श्रीगुरुदेव का कृपा-प्रसाद प्राप्त करके शिष्य को अन्तरात्मा का ध्यान, इसके दर्शन करने चाहिए। इस गुरुमार्ग से अपने आत्मस्वरूप का ज्ञान होता है।

यह मेरे लिए अत्यन्त सम्माननीय व विशेष सौभाग्य की बात है कि मुझे इस वर्ष आयोजित ३६ 'मन्दिर में रहो' सत्संगों की प्रबन्ध निदेशक [मैनेजिंग डायरेकटर] के रूप में श्रीगुरुमाई की सेवा करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। जब मैं अंक ***३६*** देखती हूँ तो यह मुझे काश्मीर शैवमत में प्रतिपादित ३६ तत्त्वों की याद दिलाता है। ये दर्शनशास्त्र बताते हैं कि परमेश्वर परमतत्त्व होने के साथ-साथ हर वह तत्त्व या पदार्थ भी हैं जिनसे मिलकर यह समस्त सृष्टि बनी है। दूसरे शब्दों में, इन तत्त्वों का ज्ञान हमारी अपनी सत्ता के सभी पहलुओं पर प्रकाश डालता है और हमें दिखलाता है कि परम दिव्यता ही हमारा सच्चा सार है। तो क्या आप यह नहीं कहेंगे कि 'मन्दिर में रहो' सत्संगों के लिए यह अत्यन्त सटीक उपमा है? एक के बाद एक सत्संग, ऐसे होते-होते कुल मिलाकर ३६ सत्संगों में हमने स्वयं अपनी अन्तर-सत्ता का अन्वेषण किया है और अपनी अन्तर्जात दिव्यता की खोज की है।

मुझे इस बात में बिलकुल सन्देह नहीं है कि 'मन्दिर में रहो' सत्संगों में जो शक्तिकण उत्पन्न होकर संचित हुए हैं, उन्होंने आपको सशक्त किया है, प्रेरित किया है, उत्साहित किया है, उद्दीप्त किया है, अनुप्राणित किया है, प्रोत्साहित किया है और ऊर्जा से भर दिया है जिससे आप अपने जीवन में उचित क़दम उठा सकें!

इन सत्संगों में हमें जो ज्ञान प्राप्त हुआ, जो सिद्धयोग अभ्यास हमने किए, जिस मौन का हमने रसास्वादन किया, जिस आनन्द को अंगीकार किया, उससे दुर्बलता का हर भाव साहस में बदल गया; उदासी या शिथिलता का भाव चैतन्य से पूरित हुआ; पराजय का, असफलता का भाव आत्मविश्वास में बदल गया; भय, पराक्रम में परिवर्तित हुआ।

अब, मैं आपको दो बातें बताना चाहती हूँ। पहली बात है, आभार व्यक्त करना। और दूसरी है, आगामी सीधे वीडिओ प्रसारणों से सम्बन्धित कुछ जानकारी देना; सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर इनमें भाग लेने के लिए आप सादर आमन्त्रित हैं।

पहले, मैं धन्यवाद देती हूँ। धन्यवाद आप सभी को जिन्होंने 'मन्दिर में रहो' सत्संगों में भाग लिया—चाहे आपने एक सत्संग में भाग लिया हो या अनेक सत्संगों में। आप जानते हैं कि आप जो अनुभव करना चाहते थे, वह आपने पाया है। आप सभी को धन्यवाद।

उन सभी को धन्यवाद जिन्होंने एक-दूसरे को सन्देश देकर, अपनी तरफ़ से सभी को प्रेम से आमन्त्रित करने की सेवा अर्पित की ताकि सभी लोग 'मन्दिर में रहो' सत्संगों में भाग ले सकें। आपने सद्भावना का एक सम्बन्ध बनाया जिसने हम सभी को तुरन्त एक-साथ जोड़ दिया। धन्यवाद!

और उन सभी को धन्यवाद जिन्होंने यह कहने के लिए मुझसे सम्पर्क किया कि *आप सेवा करना चाहते हैं, आप सेवा करना चाहते हैं, आप सेवा करना चाहते हैं।* जब भी मुझे आपसे ऐसा सन्देश मिलता, तब हर बार मुझे दृढ़ता से लगता कि मैं सही स्थान पर, सही समय पर, सही लोगों के साथ हूँ। आप सभी से मुझे खूब प्रेम मिला। आपके द्वारा मैं प्रत्यक्ष रूप में उन सद्गुणों का अनुभव कर पाई जो सद्गुण श्रीगुरुमाई हमें हर वर्ष 'आनन्दमय जन्मदिवस' के माह के दौरान प्रदान करती हैं; आपके साथ इस आदान-प्रदान के दौरान ये सद्गुण बड़े जोश के साथ सजीव हो उठे। निस्सन्देह, सभी प्रतिभागी, 'मन्दिर में रहो' सत्संगों में आपके योगदान से प्रफुल्लित हुए और उसकी स्मृतियाँ उनके मन में अंकित हो गई हैं।

मैं एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन में उन सभी के प्रति भी अपना आभार प्रकट करना चाहती हूँ जिन्होंने इतनी स्फूर्ति व कुशलता के साथ हर एक सत्संग का निर्माण किया—चाहे आप यहाँ श्री मुक्तानन्द आश्रम में सेवा अर्पित कर रहे थे या विश्वभर के भिन्न-भिन्न भागों में स्थित अपने-अपने घर से सेवा अर्पित कर रहे थे। मिल-जुलकर एक-साथ सेवा करने के आपके जोश की, आपके कौशल की और आपकी रचनात्मकता की कोई सीमा न थी। यह मेरा अनुपम सद्भाग्य था कि 'मन्दिर में रहो' सत्संगों की प्रबन्ध निदेशक के रूप में सेवा करते हुए मुझे सहयोग देने के लिए इतनी उत्कृष्ट टीम रही!

आपमें से बहुतों से मैंने सुना कि आपके घर में, आपके परिवार के सदस्य—और यहाँ तक कि वे भी जो कि देखा जाए तो शायद सिद्धयोगी न हों—सेवाकर्ता बनकर सेवा अर्पित कर रहे थे, तकनीकी रूप से व्यवस्था करने में मदद कर रहे थे और एक सुन्दर वातावरण का निर्माण कर रहे थे ताकि आप 'मन्दिर में रहो' सत्संग में भाग ले सकें व अपनी सिद्धयोग साधना में संलग्न हो सकें। आपके घर सबसे खूबसूरत सत्संग-हॉल में बदल गए थे, हर एक घर सिद्धयोग वैश्विक हॉल का एक विशेष व अनूठा भाग बन गया था। आपको धन्यवाद, और आपके सभी प्रियजनों को यह सेवा अर्पित करने के लिए धन्यवाद।

अब मैं आपको एक नई जानकारी देना चाहती हूँ।

आपको याद होगा कि ईशा सरदेसाई ने 'मन्दिर में रहो' के परिचय में, यह बताया था कि सिद्धयोग वैश्विक हॉल में सीधे वीडिओ प्रसारण द्वारा आयोजित इन सत्संगों के लिए गुरुमाई जी का संकल्प था कि लोगों का फिर से उत्साहवर्धन हो। और ठीक ऐसा ही हुआ है; हम सबने ठीक यही अनुभव किया है।

चूँकि यह संकल्प अब फलीभूत हुआ है, मैं आपको सूचित करना चाहती हूँ कि जल्द ही, आपको सीधे वीडिओ प्रसारण द्वारा सिद्धयोग वैश्विक हॉल में आयोजित होने वाले आगामी अध्ययन व

सत्संग में भाग लेने के लिए एक आमन्त्रण मिलेगा। और यह आमन्त्रण होगा, इन कार्यक्रमों के प्रबन्ध निदेशक, स्वामी अखण्डानन्द की ओर से। स्वामी जी आपको इनमें भाग लेने के लिए आवश्यक जानकारी देंगे।

इसके साथ, 'मन्दिर में रहो' सत्संगों की प्रबन्ध निदेशक के रूप में मेरी सेवा-भूमिका का अब समापन होगा। आश्वस्त रहें कि मैं अन्य भूमिकाओं में एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन में सेवा अर्पित करती रहूँगी, और भी अधिक उत्साह से, हर्ष से, और भी अधिक समर्पण के साथ। ☺

एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन द्वारा प्रायोजित आगामी सीधे वीडिओ प्रसारणों सम्बन्धी अधिक जानकारी के लिए हमारे साथ बने रहें!

हमने एक मूल सिद्धान्त के साथ इस पत्र का आरम्भ किया—खुशी, आनन्द! —तो आइए आनन्द पर ही पुनः लौटते हुए, लिओ टॉल्स्टॉय के इन प्रेरणादायी शब्दों के साथ हम इसका समापन करें :

"अगर तुम खुश रहना चाहते हो, तो रहो।"

आदर सहित,
रोहिणी मेनन
प्रबन्ध निदेशक, 'मन्दिर में रहो'

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।